स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

विलियम समरलिन - 'पेंटिंग द माइस'

वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में धोखाधड़ी का एक मामला विलियम समरलिन का रहा है जो एक त्वचा रोग विशेषज्ञ थे। समरलिन ने अपने हैरतअंगेज़ दावे से लोगों का ध्यान आकर्षित किया मगर जल्दी ही पकड़े गए। समरलिन न्यूयार्क स्थित मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर सेंटर में प्रतिरक्षा विज्ञानी राबर्ट गुड के साथ प्रतिरक्षा विज्ञान पर शोध कार्य कर रहे थे। उनके शोध का विषय था ऊतक प्रत्यारोपण के संदर्भ में प्रतिरक्षा तंत्र का अध्ययन। अर्थात जब किसी जीव को दूसरे जीव का ऊतक प्रत्यारोपित किया जाता है तो उसका प्रतिरक्षा तंत्र क्या प्रतिक्रिया करता है।

समरलिन का दावा था कि किसी भी जीव में किसी अन्य जीव के ऊतक का प्रत्यारोपण सम्भव है चाहे वे उनके बीच परस्पर कोई आनुवंशिक सम्बंध न हों। समरलिन के मुताबिक उस जीव का शरीर इस नए ऊतकों को अस्वीकार भी नहीं करेगा। शर्त यह थी कि दाता से प्राप्त ऊतकों को चार से छह हफ्ते तक एक विशेष संवर्धन माध्यम में रखना होगा। ज़ाहिर है, इस तरह का शोध और उससे प्राप्त परिणाम अंग प्रत्यारोपण की दृष्टि से निहायत महत्त्वपूर्ण थे।

सन् 1974 में समरलिन ने अपने परिणामों का प्रदर्शन किया। उन्होने एक ऐसा सफेद चूहा प्रदर्शित किया जिसकी पीठ की त्वचा का कुछ हिस्सा काला था। समरलिन के मुताबिक वह काला हिस्सा किसी असम्बंधित दाता चूहे से लेकर प्रत्यारोपित किया गया था।

गुड्स की प्रयोगशाला में समरलिन के इस प्रदर्शन के दौरान एक तकनीशियन ने महसूस किया कि प्रत्यारोपित हिस्सा वास्तव में चूहे की त्वचा को परमानेंट मार्कर से रंग कर बनाया गया है। इस निशान को एल्कोहल से धोकर हटाया भी जा सकता था।

समरलिन ने बाद में माना कि लगातार शोधकार्य करने से वे शारीरिक और मानसिक थकावट से भर गए थे और उन पर शोध के सकारात्मक परिणाम देने का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा था।

इस घटना का एक दिलचस्प परिणाम यह हुआ कि 'पेंटिंग द माइस' (चूहे पर चित्रकारी) शोध कार्यों में धोखाधड़ी का पर्यायवाची मुहावरा बन गया। इस पूरे काण्ड पर जोसेफ हिक्सन ने तो एक किताब भी लिखी है - *दी पैचवर्क माउस*।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी